जितिया व्रत कथा PDF

इस कथा के अनुसार जीमूतवाहन गंधर्व एक बुद्धिमान राजा थे। जीमूतवाहन शासक बनने से संतुष्ट नहीं थे और परिणामस्वरूप उन्होंने अपने राज्य की सारी ज़िम्मेदारियाँ अपने भाइयों को दे दीं और अपने पिता की सेवा करने के लिए जंगल में चले गए। एक दिन जंगल में घूमते हुए उसकी नजर विलाप करती हुई एक बुढ़िया पर पड़ती है।

उसने बुढ़िया से रोने का कारण पूछा। इस पर उसने उसे बताया कि वह साँपों के परिवार (नागवंशी) से है और उसका एक ही बेटा है। पक्षीराज गरुड़ को प्रतिदिन एक साँप शपथ के रूप में अर्पित किया जाता था और उस दिन उनके पुत्र की बारी थी।

उनकी समस्या सुनने के बाद जीमूतवाहन ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनके बेटे को जीवित वापस ला देंगे। फिर वह गरुड़ के लिए चारा बनने का विचार करते हुए स्वयं चट्टान पर लेट जाता है। तभी गरुड़ आते हैं और लाल कपड़े से ढके जीमूतवाहन को अपनी उंगलियों से पकड़कर चट्टान पर चढ़ जाते हैं।

उसे आश्चर्य होता है कि जिस व्यक्ति को उसने पकड़ा है वह प्रतिक्रिया क्यों नहीं दे रहा है। फिर वह जीमूतवाहन से उनके बारे में पूछता है। तब गरुड़ जीमूतवाहन की वीरता और दानशीलता से प्रसन्न होकर नागों से और बलि न लेने का वचन देते हैं। मान्यता है कि तभी से संतान की लंबी उम्र और खुशहाली के लिए जितिया व्रत मनाया जाता है।

pdfinbox.com